

क्रांतिवृत्त का वह बिंदु जहाँ उक्त क्षण सूर्य स्थित होता है।

वसंत सखा पुं. (तत्.) वसंत का साथी अर्थात् वसंत ऋतु में जिसका साहचर्य अधिक हो, कामदेव।

वसंती वि. (तत्.) 1. वसंत ऋतु से संबंधित जैसे- वसंती मौसम, वसंती रात्रि उदा. 'आ वसंत रजनी' -महादेवी 2. वसंत ऋतु में फूलने वाली सरसों के फूलों की तरह हल्के पीले रंग का वसंती जैसे- वसंती साड़ी, वसंती चोली।

वसंतोत्सव पुं. (तत्.) 1. वसंत पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी) के दिन मनाया जाने वाला उत्सव 2. प्राचीन काल में वसंत पंचमी के अगले दिन [माघ शुक्ल षष्ठी (छठ)] मनाया जाने वाला उत्सव जिसमें कामदेव की पूजा का आयोजन होता था 3. होलिकोत्सव।

वसति स्त्री. (तत्.) 1. निवास करना, रहना, वास 2. घर 3. आबादी, बस्ती 4. जैन साधुओं का मठ 5. रात्रि।

वसती स्त्री. (तत्.) 1. वास, रहना 2. निशा, रात 3. घर 4. बस्ती।

वसन पुं. (तत्.) 1. वस्त्र धारण करने की क्रिया 2. वस्त्र, परिधान 3. स्त्रियों की कमर का एक आभूषण, करधनी 4. घर 5. आवरण, आच्छादन 6. रहना, वास।

वसना स्त्री. (तत्.) स्त्रियों का कमर में पहनने का जंजीरनुमा एक आभूषण, करधनी वि. वस्त्र, वस्त्रों को धारण करने वाली जैसे- नीलवसना, पीतवसना, श्वेतवसना अ.क्रि. 1. निवास करना, किसी स्थान पर रहना जैसे- 'भक्त हृदय भगवंत वसत हैं 2. वश में होना।

वसनाभरण पुं. (तत्.) वस्त्र और आभूषण।

वसवास पुं. (अर.) 1. भुलावा, भ्रम 2. संशय, संदेह 3. अविश्वास 4. आगा-पीछा, दुविधा।

वसह पुं. (तद्.) बैल।

वसा स्त्री. (तत्.) 1. पीले अथवा सफेद रंग का एक चिकनाई युक्त पदार्थ जो पशुओं, मछलियों और मनुष्यों के शरीर में मिलता है जिसके आधिक्य से मोटाई आती है, चरबी fat 2. उक्त प्रकार का कोई सेंद्रिय तत्व या पदार्थ जो फलों अथवा पौधों में उपलब्ध होता है 3. मज्जा।

वसाग्रंथि स्त्री. (तत्.) स्तनपाइयों की त्वचा में स्थित एक ग्रंथि जो एक विशिष्ट प्रकार का तेल अथवा वसामय पदार्थ का स्राव करती है, तैल ग्रंथि।

वसापघटन पुं. (तत्.) रसा. चर्बी का रासायनिक विघटन।

वसामयता पुं. (तत्.) शरीर में चर्बी का आधिक्य हो जाना, स्थूलता।

वसामेह पुं. (तत्.) चिकि. मूत्र में तैलीय तत्व (वसा) की मात्रा का आधिक्य हो जाना।

वसारक्तता स्त्री. (तत्.) रक्त में चिकनाई युक्त पदार्थ (वसा) की मात्रा का अधिक हो जाना।

वसिष्ठ पुं. (तत्.) दे. वशिष्ठ।

वसिष्ठपुराण पुं. (तत्.) एक उपकरण का नाम, कुछ विद्वानों के मतानुसार लिंग पुराण ही वसिष्ठ पुराण है।

वसित वि. (तत्.) 1. धारण किया हुआ, पहना हुआ, धारित 2. निर्वासित 3. जमा किया हुआ, एकत्रित, संग्रहित।

वसीअ वि. (अर.) चौड़ा, फैला हुआ, विस्तृत, विशाल जैसे- वसीअ मैदान।

वसीका पुं. (तद्.) 1. वह धन जिससे प्राप्त सूद जमाकर्ता के संबंधी व्यक्ति को दिए जाने की शर्त हो 2. वजीफा, वृत्ति।

वसीय वि. (तत्.) 1. जिसमें वसा या चर्बी का पूर्ण समावेश हो, वसा-पूर्ण चर्बी वाला, मेदयुक्त 2. वसा की तरह।

वसीयत स्त्री. (अर.) 1. मुमूर्षु व्यक्ति के अंतिम समय का (लिखित) निर्देश 2. मरने के समय